श्री रामदास अग्रवाल (राजस्थान): उपसभापति महोदया,मेरा एक निवदेन है कि इंडस्ट्री पर डिसकशन तो होना चाहिए,क्योंकि आज की वर्तमान स्थिति में इंडस्ट्री पर डिसकशन,इसने बहुत सारी बातें और समस्यायें खड़ी हो गई है देश में बेकारी और मंदी आदि की,उसके ऊपर चर्चा अगर सदन नहीं करेगा तो शायद उचित नहीं लगेगा इसलिए मेरा निवेदन है कि कोई समय आप उसके लिए निश्चित अथवा तय कर दें,क्योंकि इंडस्ट्री पर चर्चा आगे खिसकती जा रही है और देश में उद्योग संकट में पड़ते जा रहे हैं।

SHRI JAYANT KUMAR MALHOUTRA: Madam, I agree with him. This should be taken up during the course of this Session.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We have two days of the Session left-Monday and Tuesday - for which there is already some business pending.

SHRI JAYANT KUMAR MALHOUTRA: Could not the Session be extended till the 5th?

THE DEPUTY CHAIRMAN: That is what I feel. Your can reqeust the hon. Chairman. When he comes, you can request him. If necessary, we can extend the Session so that we are able to have the discussion on the working of the Ministry of Industry.

SHRI JAYANT KUMAR MALHOUTRA: Thank you very much. Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned for lunch, for one hour.

The House then adjourned for lunch at, thirty-one minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-three minutes past two of the clock,

The Deputy Chairman in the Chair.

SPECIAL MENTIONS

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now we shall take up Special Mentions. Shrimati Jayanthi Natarajan. Absent. Dr. D. Venkateshwar Rao. Absent. Shri Amar Singh. Absent. Shri Rama Shanker Kaushik.

Killing of Minority Community VQuths by Police in Muzaffarnagar District, U.P.

श्री रमा शंकर कौशिक(उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदया,मुझे बड़े दुख के साथ आपके माध्यम से इस सदन के समक्ष यह तथ्य रखना है कि उत्तर प्रदेश में अल्पंसख्यकों के प्रति ने केवल अन्याय हो रहा है,न केवल उनके खिलाफ अत्याचार हो रहे हैं,न केवल उन्हें आतंकित किया जा रहा है वरन् उन की हत्याएं भी हो रही है। मैडम,कुछ दिनों पूर्व मैं न अनेक ऐसी मिसालें बुलंदशहर,गाजियाबाद तथा अन्य जिलों में संबंध में दी थीं जिन में निर्दोष अल्पंसख्यकों नौजवानों को मार दिया गया।

मैडम,अभी 24 तारीख को यानि 24/25 तारीख की रात को चार नौजवान जो मेरठ से अपनी गाड़ी से मुजफ्फरपुर जा रहे थे,उनकी हत्या जानसठ पुलिस ने कर दी। इनमें से कोई भी अपराधी नहीं था और न ही इनके खिलाफ कोइ अपराध के मुकदमें चल रहे थे,लेकिन उनको पकड़ कर जानसठ पुलिस ने मार दिया। इनता ही नहीं,मैडम उनकी लाशें पहचानी न जा सकें,इसलिए उनके चेहरों पर तेजाब डाल दिया और उनके हाथ-पांव तोड़ दिए गए। वह तो अखबार में जब गाड़ी का फोटा छपा तो उस पर छापे नंबर को देखकर उनके घर वालों ने पहचाना की यह उनके परिवार के सदस्यों की लाशें है।

मैडम,यह हत्याएं जानबूझकर की गई है और यह सिलसिला उत्तर प्रदेश में पिछले कई महीनों से लगातार चल रहा है। हम लोगों ने कई बार इस बात को लेकर प्रश्न रखे,लेकिन एकाध बार हम लोगों को इस संबंध में इजाजत मिली है। पिछली बार मैने इसको बताया भी था। अब इसके क्या कारण है,क्यों ऐसा हो रहा है,इस पर हम लोगों को जरूर विचार करना चाहिए। यह जो जानसठ पुलिस ने जिस ढंग से यह कार्यवाही की है,जिस ढंग से उन लोगों की हत्याएं की है,उनकी लाशें को बिगाड़ने का काम किया है ताकि वह लाशें पहचानी न जाएं,पुलिस इस बात में किसी गिरफ्त में न आ पाए इसलिए उन लाशों को लावारिस करार देने के लिए पुलिस ने यह हरकत की कि उन लाशों के चेहरों पर तेजाब डाल दिया गया,उनके हाथ-पांव तोड़ दिए गए। इस पर भी विचार जरूरी है और मैडम,यह इसलिए हो रहा है कि वहां तमाम जो मशीनरी है प्रशासनिक है और पुलिस की,उसका राजनीतिकरण किया जा रहा है और केवल राजनीतिकरण ही नहीं बल्कि मैं तो यहां तक कहूंगा कि उसका संप्रदायीकरण कर दिया गया है।

मैडम,24 तारीख का सरसंघ चालक,आरएसएस के सरसंघ चालक ने आई.ए.एस.और आई.पी.एस.अधिकारियों से मीटिंग की । ...(**व्यवधान**) ....

श्री संध प्रिय गौतम: आप नाम लेकर मत बोलिए ।

श्री रमा शंकर कौशिक: मैं नाम नही ले रहा हूं,लेकिन आई.ए.एस.और आई.पी.एस.के अधिकारियों की मीटिंग 24 तारीख को तिलक हाल,उत्तर प्रदेश के कौन्सिल हाउस में हुई है । ....(**व्यवधान**)...

श्री आकार सिंह लखावत: सरसंघ चालक का इससे कुछ देना नहीं है । ...(**व्यवधान**)....

श्री रमा शंकर कौशिक: क्या आप इस बात से इंकार करेंगे कि वहां पर मीटिंग नहीं हुई है ? इंकार करते हो तो कहिए ।...(**व्यवधान**)...यह कोई व्यक्तिगत सवाल नहीं है । आई.ए.एस.और आई.पी.एस.अधिकारी किसी के घर के नहीं है । यह तो हिन्दुस्तान के है,भारत की सरकार के है । आई.ए.एस.और आई.पी.एस.अधिकारी किसी व्यक्ति के नहीं है । आप कैसी बात कह रहे हैं ।

मैडम,आई.ए.एस.और आई.पी.एस.अधिकारियों की मीटिंग होती है और संरसघ चालक उनको वहां संबोधित करते हैं । किसलिए? किसलिए वहां गए ? क्या भौतिक शाखा पढ़ाने गए थे ? क्या वहां फिजिक्स पढ़ाने गए थे ....(**व्यवधान**)...

श्री संघ प्रिय गौतम: मैडम,पाइंट आफ आर्डर ।

उपसभापति: क्या है आपका पाइंट ऑफ आर्डर ? ....(**व्यवधान**)...एक सेंकेंड ।पाइंट ऑफ आर्डर क्या हैं।

श्री संघ प्रिय गौतम: मैडम,देखिए,ऐसा है कि आपने कहा-भौतिक शास्त्र पढ़ाने गए थे,

Madam, innumerable I.A.S. Officers had been his students. Even Mr. Vis-hwanath Pratap Singh, a former Prime Minister of the country, was his student. So, if he meets the students, what is the harm in it?

उपसभापति: ठीक है,इन्होंने आन्सर दे दिया । इसमें पांइट आफ आर्डर कुछ नहीं है,

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: I am sorry. It was a point of information.

श्री रमा शंकर कौशिक: मैडम,मेरा निवेदन केवल इतना है कि आज तक कभी भी हिन्दुस्तान की राजनीति में आजादी के बाद से किसी भी राजनीतिक पार्टी के अध्यक्ष ने आई.ए.एस.और आई.पी.एस.के अधिकारियों को संबोधित नहीं किया और यह बैठक किसी के घर में नहीं थी बल्कि तिलक हॉल कौन्सिल हाऊस,लखनऊ ,जो उत्तर प्रदेश में कौन्सिल हाऊस है,वहां यह बैठक हुई । मेरा निवेदन यह है,इसमें यह नहीं कह सकते कि उनको वह फिजिक्स पढ़ाने गए थे । कोई सवाल ही नहीं है फिजिक्स पढ़ाने का । हम यह भी नहीं कह सकते कि उनको वह नियम बताने गए थे क्योंकि आई.ए.एस.और आई.पी.एस.अधिकारी नियमों को अच्छी तरह से जानते है कि किस प्रकार से उन्हें अपना काम करना है । वे ऐसे अनजान नहीं है कि उनको यह बताना पड़ें । तो,किस लिए गए थे ? यह मैं इसलिए कहना चाहता हूं,मैडम,कि हमारे उत्तर प्रदेश में तमाम प्रशासन और पुलिस प्रशासन,इसका पूरा का पूरा राजनीतिकरण करने की कोशिश की जा रही है और संप्रदायीकरण करने की कोशिश की जा रही है । यह घटना इसी का नतीजा है । आप इस बात को देखें कि 24 तारीख को यह बैठक हुई और उसी 24/25 की रात को इस प्रकार से कत्ल हुए । इससे पहले भी निरंतर वहां उत्तर प्रदेश में कत्ल हो रहे है । मैडम,यह बहुत ही गंभीर मामला है । मैं चाहूंगा कि केन्द्रीय सरकार को इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए और उस पुलिस के खिलाफ भी मर्डर का केस चालू करना चाहिए,उनको गिरफ्तार किया जाना चाहिए । मुआवजे वाली बात तो अपनी जगह है ही,वह अलग बात हैं,लेकिन यहां सवाल यह है कि अगर इस प्रकार से हमारे प्रशासनिक अधिकारी और पुलिस अधिकारी कार्य करेंगे,तो किस प्रकार से हमारा देश एकता में बंध रहेगा,एकजुट रहेगा ? ये सारी साजिशें जान-बूझकर की जा रही है और हिन्दुस्तान को टुकड़ों में बांटने की कोशिश की जा रही हैं ।

मैडम,मैं इस सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि केन्द्रीय सरकार को तुरंत इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए और उन दोषियों के खिलाफ,जिन्होंने इस प्रकार की हरकत की हैं या और भी दूसरे जिलों में जो इस प्रकार की हरकतें हुई हैं,उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए और इसके लिए एक संसदीय समिति गठित होनी चाहिए जो उत्तर प्रदेश में जाकर इन सारी चीजों को देखे कि किस प्रकार से प्रशासनिक अधिकारियों का और पुलिस अधिकारियों का राजनीतिकरण किया जा रहा है ।

उपसभापति: श्री राम गोपाल यादव,ऐबसेंट । श्री मोहम्मद आज़म खान । आपको सिर्फ ऐसोसिएट करना हैं,बहुत लम्बा भाषण नहीं देना है ।

श्री मोहम्मद आज़म खान(उत्तर प्रदेश)**:** मैडम, बहुत लम्बा भाषण नहीं होगा ।

मैडम,मैं आपकी तवज्ज़ों दो-तीन रोज़ पहले वज़ीरे दाखिला साहब की उस फिक्कमंदी की तरफ ले जाना चाहूंगा जिसमें उन्होंने बेगुनाह लोगों को थानों में बंद करके मारने या मार डालने पर अपनी फिक्कमंदी का इज़हार किया था । उस वक्त यह लगा था कि जब मुल्क का वज़रे दाखिला और दूसरे नम्बर का वज़ीर इतनी अहम सोच रख रहा हो तो उसका कोई न कोई पैग्राम आवाम और मुल्क को चलाने वाले लोगों में जाएगा ।लेकिन अभी कौशिक जी ने जिस मौजू के ऊपर अपना इज़हारे ख्याल किया है-उत्तर प्रदेश और हिन्दुस्तान में रहने वाली अक्लियतों के साथ होने वाले मज़ालिम पर-वह बहुत चिंताजनक हैं । खासतौर पर उत्तर प्रदेश और गुजरात में जो हालात है,वे हालात अब इस हद तक बिगड़े हैं कि अगर इन पर संजीदगी से कोई सोच न बनी और इन पर संजीदगी में गौर न हुआ तो इनका नुकसान सिर्फ एक तरफ नहीं होगा,बल्कि कई तरफा इसके नुकसानात् मुमकिन हैं । मैडम,यह बात मैं इसलिए भी कह रहा हूं कि आज़ादी के दिन,15 अगस्त,1947 को,जब करोड़ों इंसानों का हिन्दुस्तान खुशिया मना रहा था,उस वक्त हमारे सामने एक मिसाल,एक बहुत दुबले जिस्म वाले,सिर्फ धोती पहने और लाठी लिए हुए,बापू की भी थी जिसने आज़ादी की खुशी नहीं मनाई थी । वह आजादी जिसे बापू ने बड़ी मेहनत के बाद हासिल किया था,उस आज़ाद की खुशी बापू ने नहीं मनाई थी और नवा खाली के दंगों में 15 अगस्त,1947 गुज़ारा था । यह पैग्राम था आज़ाद हिन्दुस्तान के लिए । लेकिन आज़ादी के इन 50 सालों में जो प्रैग्राम मिला है,वह किसी से छिपा हुआ नहीं है । इन 15-20 रोज़ में जिस तरह से अक्कलियतों के लोगों की मौतें हुई हैं,उसकी तरफ हमारी नज़र जरूर जानी चाहिए ।

मैडम,सरकारें आती है,चली जाती है,किसी सोच की सरकार आए,किसी सोच की सरकार चली जाए,यह चलता रहता है लेकिन कोई सोच ऐसी सरकार लेकन आ जाए जिसमें इंसानों की ज़िंदगियां बड़ी सस्ती हो जाएं और उनको मारना सरकार की पालिसी हो जाएं,उसके तंत्र बेगुनाह लोगों को रास्ते में रोक-रोक कर मारने लगें और यहां तक हो कि मारने के बाद प्रदेश का मुख्य मंत्री यह खुद कहे कि ये बेगुनाह लोग मार दिए गए और मरने वालों को दो लाख रूपए दिए जाते हैं,यह बड़ी चितांजनक बात है । यह कोई एक वाक्या नहीं हैं । बुलंदशहर में यासीन को मारा गया और उसके घर वालों को दो लाख रूपए सरकार को दिए । दिल्ली की नाक के नीचे बसे हुए गाजियाबाद में एक बूढ़े इकबाल को थाने में ले जाकर मारा गया और उसके बाद कहा गया कि हम किसी जरायमपेशा को समझ कर लाए थे और मुख्य मंत्री ने दो लाख रूपए दे दिए । हमारी गरीब पार्टी के कार्यकर्त्ताओ ने भी एक-एक लाख रूपए जमा करके दिए । लेकिन मैं कहना चाहता हूं,मैडम,कि जिंदगी का यह मुआवज़ा नही था,ज़िदगी का यह बदला नहीं था और हर मौके पर यह कह देना कि धोखा हो गया है,यह ठीक नही है । इसी तरह का धोखा एक सियाह रात को मुजफ्फरनगर की जानसठ तहसील के करीब एक दारोगा के हाथों हुआ,जिसका इतिहास,जिसकी तारीख इसी तरह की है । मैडम,आपको याद होगा कि बरेली ज़ोन के एक आई.जी.हुआ करते थे,जिनका नाम कैट था,उनको इस शख्स ने ब्लैकमेल किया और इतना ब्लैकमेल किया कि आई.जी.पुलिस को रात के वक्त अपने गले में फांसी का फदां डालकर खुदकुशी करनी पड़ी और उसने अपनी मौता का जिम्मेदार इसी गौतम दारोगा को बताया,जिस गौतम दारोगा ने इन पांच बेगुनाहों को,जो अपने बाप की मोटर से,अपने एक रिश्तेदार के घर जा रहे थे,क्रूरतापूर्वक मौत के घाट उतार दिया । मैडम,ये कैसे जरायमपेशा थे,जिनकी कोई क्रिमिनल हिस्टरी नहीं है,जिनका कोई क्रिमिनल इतिहास नहीं है ? यह माना जा सकता है कि किसी शख्स का क्रिमिनल इतिहास इस दिन से शुरू हो,जिन दिन वह पकड़ा जाए,लेकिन हम अपनी जिम्मेदारी के साथ,पूरी मालूमात् के साथ,इस सदन में यह रखना चाहते है कि ये पांच लोग मेरठ से रवाना हुए अपने रिश्तेदार के यहां जाने के लिए और अपने वालिद की मोटर से रवाना हुए । ये ऐसे लोग नहीं थे जिन्हें हम यह कह सकें कि इनके चरित्र के बारे में,इनकी जिंदगी के बारे में किसी को पता नहीं चल सकता । चूंकि उससे पहले वहां कुछ लूट हो चुकी थी,इसलिए दरोगा साहब ने यह समझा कि ये लुटेरे लोग हैं । इन लोगों की गाड़ी को चेज़ किया गया और उसमें से असलम नाम के 18 साल के नौजवान को इतना मारा गया कि वह मर गया । यह मैं अपनी तरफ से नहीं कह रहा हूं । वहां के लोगों के बयानात के अलावा हिंदुस्तान का एक जिम्मेदार अखबार टाईम्स ऑफ इंडिया 29.7.98 को लिखता है कि:-

"The police are alleged to have killed five youths belonging to Meerut in an encounter, after mistaking them for criminals."

क्या ऐसे चलेगा देश । यह भी हमें याद रखना चाहिए कि इस तरह की बातें लोगों को कहकर या इस तरह से उन्हें बहलाकर अपनी जिम्मेदारी को खत्म नहीं किया जा सकता । इस असलम की इतनी पिटाई की गई,इतना टॉर्चर किया गया कि उसकी मौत हो गई । उसकी मौत को छिपाने के लिए उस दरोगा ने इन 4 नौजवानों में से एक के हाथ काटे,एक के पैर काटे और इन चारों को गोली मारकर पांचवें यानी असल शख्स की लाश को गायब कर दिया । क्रूरता,जुल्म,जयादती,नाइंसाफी,इसकी कोई इनतहा तो हो । जब शैतान नंगा होकर सड़कों पर निकलने लगे तो जाहिर है कि इंसानियत के दरवाजे बदं हो जाएंगे । कुछ ऐसा ही माहौल आज सारे हिंदुस्तान में हैं ।

महोदय,इसीलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि सवाल मुआवज़े का नहीं है,भिखारी को भीख देने का नहीं है,अकल्लियतों को रहमों-करम पर जिंदा रखने का सवाल नहीं है बल्कि सवाल उस सविंधान का है जिसको कुछ लोग बदलने की बात करते हैं । उस संविधान की रखवाली की जिम्मेदारी उन लोगों पर भी है जो आज बहुत दुखी हैं,जिनके साथ बहुत अन्याय हुआ हैं ।

महोदया,मैं एक मिसाल और देता हूं आपको गुजरात की । मैं उस मानसिकता की तरफ अंगुली उठाना चाहता हूं जो मानसिकता आज इकतेदार में हैं,सत्ता में हैं,जो आज कमज़ोरों को जीने नहीं देना चाहती,जो अकल्लियतों को खास तौर से अपने जुल्म का निशाना बनाए हुए हैं । महोदया,गुजरात के कब्रिस्तान में एक लाश दफन हुई और उस लाश को आर.एस.एस.और शिव सेना के कार्यकर्त्ताओं ने निकालकर बाहर फेंक दिया बावजूद इसके कि यह मुकदमा जीता जा चुका था जमीन का। आखिरी अदालत से यह मुकदमा जीता जा चुका था लेकिन माईट इज़ राईट को अपना अख्तियार और अपना हम समझते हुए जो जिंदों को मारने का काम करते है,उन्होंने मुर्दो को भी कब्रिस्तानों में रहने का हक नहीं दिया है । इसलिए मैं आपके जरिए सरकार तक यह बात पहुंचाना चाहता हूं कि मामला सिर्फ मुआवज़े का नहीं है बल्कि मामला इंतहाई संजीदा है । मैं मुकाबला करना चाहता हूं इस सरकार का और गई हुई सरकार का । मैं उसकी अच्छाइयों और बुराइयों की तरफ अंगुजी नहीं उठाना चाहता । यह बिल्कुल सही बात है कि आपको बहुत कम वक्त मिला है । इतने कम वक्त में आपने तो बहुत कुछ कर दिखाया है । लंबे वक्त में आप कितना काम करेंगे,यह तो इतिहास ही बताएगा,तारीख बताएगी लेकिन हमें यह मालूम है कि दिल्ली शहर के कनॉट-प्लेस इलाके में जब कुछ रईसों को पुलिस ने मारा था तो उसके खिलाफ 302 का मुकदमा कायम हुआ था लेकिन एस.एस.पी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई जब कि यह तस्लीम कर चुका है कि "हां,क्रिमिनल्स के धोखे में बेगुनाहों को मारा गया । " दिल्ली की सड़क परमारे जाने वाले के लिए तो 302 का मुकदमा लिखा जा सकता है लेकिन गरीब,अकल्लियत के लोग,5-5 लोग एक वक्त में मार दिए जाते हैं लेकिन उस दरोगा के खिलाफ किसी किस्म की कार्यवाही नहीं होती ।

इसलिए मैं आपके जरिए सरकार से दरख्वास्त करना चाहूंगा कि इन मज़ालिम को रोके वरनाये मज़ालिम एक दिन किसी बड़े नतीजे का पेशखेमा बन सकते हैं । मैं आपका शुक्रगुजांर हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया और मैं हुकूमत से उम्मीद करता हूं कि इस मामालो को वे अपनी मानसिकता और अपनी जूहनियत की बुनियाद पर नहीं बल्कि इंसाफ और नांइसाफी की बुनियादी पर तय करेंगे । बहुत-बहुत शुक्रिया ।

}شری محمداعظم خاں اترپردیش : میڈم بہت لمباںھاشن نہیں ہوگا۔

میڈم میں آپکی توجہ دوتین روزپہلے وزیرداخلہ صاحب کی اس فکر مندی کی طرف لے جانا چاہونگا جسمیں انھوں نے بے گناہ لوگوں کوتھانے میں بندکرکے مارنے یا مارڈالنے پراپنی فکرمندی کا اظہار کیاتھا،اس وقت یہ لگاتھاکہ جب ملک کا وزیرداخلہ اوردوسرے نمبرکاوزیراتنی اہم سوچ رکھ رہا ہو تواسکا کوئی نہ کوئی پیغام عوام اورملک کوچلانے والے لوگوں میں جائے گا۔لیکن ابھی کوشک جی نے جس موضوع کواوپراپنا اظہار اورخیال کیا ہے۔اترپردیش اور

†[ ]Transilteration in Arabic Script

میڈم،سرکاریں آتی ہیں چلی جاتی ہیں،کسی سوچ کی سرکار آئے،کسی سوچ کی سرکارچلی جائے،یہ چلتا رہتا ہے لیکن کوئی سوچ ایسی سرکارلےکرآجائے جسمیں انسانوں کی زندگیاں بڑی سستی ہوجائیں اورانکومارنا سرکارکی پالیسی ہوجائے،اسکے تنتربے گناہ لوگوں کوراستہ میں روک روک کرمارنے لگیں اوریہاں تک ہوکہ مارنے کے بعد پردیش کا مکھیہ منتری یہ خودکہے کہ یہ بے گناہ ماردئیے گئے اورمرنے والوں کودولاکھ روپے دئے جاتے ہیں یہ بڑی چنتا جنک بات ہے۔یہ کوئی ایک واقعہ نہیں ہے،بلندشہر میں یسین کومارگیا اوراسکے گھروالوں کودولاکھ روپے سرکارنے دیئے،دلی کی ناک کے نیچے بسے ہوئے غازی آباد میں ایک بوڑھے اقبال کوتھانے میں لے جاکر مارگیا،اوراسکے بعدکہاگیا کہ ہم کسی جرائم پیشہ کوسمجھکر لائے تھے اورمکھیہ منتری نے دولاکھ روپے دے دیئے۔ہماری غریب پارٹی کے کاریہ کرتاؤں نے بھی ایک ایک لاکھ روپیہ جمع کرکے دئے،لیکن میں کہنا چاہتا ہوں میڈم،تاکہ زندگی کا یہ معاوضہ نہیں تھا،زندگی کا یہ بدلہ نہیں تھا

ہندوستان میں رہنے والی اقلیتوں کے ساتھ ہونے والے مظالم پروہ بہت چنتا جنک ہے۔خاص طورپراترپردیش اورگجرات میں جوحالات ہیں،وہ حالات اب اس حد تک بگڑ گئے ہیں کہ اگران پرسنجیدگی سے کوئی سوچ نہ بنی اوران پرسنجیدگی سے غورنہ ہواتوانکانقصان صرف ایک طرف نہ ہوگا،بلکہ کئی طرف اسکے نقصانات ممکن ہیں۔میڈم،یہ بات میں اسلئے بھی کہہ رہاہوں کہ آزادی کے دن 15اگست،1947ءکو،جب کروڑوں انسانوں کا ہندوستان خوشیاں منع رہے تھا،اس وقت ہمارے سامنے ایک مثال ایک بہت دبلے جسم والے،صرف دھوتی پہنے اورلاٹھی لئے ہوئے باپوکی بھی تھی،جس نے آزادی کی خوشی نہیں منائی تھی،وہ آزادی جسے باپونے بڑی محنت کے بعدحاصل کیاتھا اس آزادی کی خوشی باپونے نہیں منائی تھی اورنوواکھالی کے دنگوں میں 15اگست 1947ءگزاراتھا،یہ پیغام تھا آزادہندوستان کے لئے۔لیکن آزادی کے ان 50سالوں میں جوپیغام ملا ہے،وہ کسی سے چھپا ہوانہیں ہے۔ان 15-20روزمیں جس طرح سے اقلیتوں کے لوگوں کی موت ہوئی ہے،اسکی طرف ہماری نظرضرور جانی چاہئے۔

پانچ لوگ میرٹھ سے روانہ ہوئے اپنے رشتہ دار کے یہاں جانے کے لئے اوراپنے والد کی موٹر سے روانہ ہوئے۔یہ ایسے لوگ نہیں تھے جنہیں ہم یہ کہہ سکیں کہ ان کے چرتر کے بارے میں،ان کی زندگی کے بارے میں کسی کوپتہ نہیں چل سکتا۔چونکہ اس سے پہلے وہاں کچھ لوٹ ہوچکی تھی،اس لئے داروغہ صاحب نے یہ سمجھا کہ یہ لٹیرے لوگ ہیں۔ان لوگوں کی گاڑی کوچین کیاگیا اوراسمیں سے اسلم نام کے 18سال کے نوجوان کواتنا ماراگیا کہ وہ مرگیا۔یہ میں اپنی طرف سے نہیں کہہ رہاہوں۔وہاں کے لوگوں کے بیانات کے علاوہ ہندوستا ن کا ایک ذمہ داراخبارٹائمس آف انڈیا 29-7-89کولکھتا ہے کہ:}

"The police are to have killed five youths belonging to Meerut in an encouter, after mistaking them for criminals."

{کیا ا سے چلے گا دیش؟یہ بھی ہمیں یادرکھنا چاہئے کہ اس طرح کی باتیں لوگوں کوکہکر یااس طرح سے انھیں بہلا کراپنی ذمہ داری کوختم نہیں کیا جاسکتا۔اس اسلم کی اتنی پٹائی کی گئی، اتنا ٹارچرکیاگیاکہ اس کی موت اورہرموقع پریہ کہہ دینا کہ دھوکہ ہوگیا ہے،یہ ٹھیک نہیں ہے،اسی طرح کا دھوکہ ایک سیاہ رات کومظفر نگرکی جانسٹھ تحصیل کے قریب ایک داروغہ کے ہاتھوں ہوا،جسکااتیہاس،جسکی تاریخ،اسی طرح کی ہے۔میڈم،آپکویادہوگا کہ بریلی زون کے ایک آئی۔جی۔ہواکرتے تھے،جنکانام کینتھ تھا انکواس شخص نے بلیک میل کیا اوراتنا بلیک میل کیا کہ آئی۔جی۔پولیس کورات کے وقت اپنے گلے میں پھانسی کا پھندہ ڈال کرخودکشی کرنی پڑی اوراسنے اپنی موت کا ذمہ داراسی کوتم داروغہ کوبتایا۔اس گوتم داروغہ نے پانچ بے گناہوں کوجواپنے باپ کی موٹر سے،اپنے ایک رشتہ دارکے گھرجارہے تھے،کروتاپوروک موت گھاٹ اتاردیا۔میڈم،یہ کیسے جرائم پیشہ تھے،جن کی کوئی کرمنل ہٹری نہیں ہے،جنکا کوئی کرمنل اتیہاس نہیں ہے؟یہ مانا جاسکتا ہے کہ کسی شخص کاکرمنل اتیہاس اس دن سے شروع ہو،جس دن وہ پکڑا جائے۔لیکن اپنی ذمہ داری کے ساتھ،پوری معلومات کے ساتھ،اس سدن میں یہ رکھنا چاہتے ہیں کہ یہ

ہوگئی۔اس کی موت کوچھپانے کے لئے اس داروغہ نے ان چار نوجوانوں میں سے ایک کے ہاتھ کاٹے،ایک کے پیرکاٹے اوران چاروں کوگولی مارکر پانچویں شخص یعنی اسلم کی لاش کوغائب کردیا۔کرورتا،ظلم،زیادتی کاانسانی،اس کی کوئی انتہاتوہو۔جب شیطان ننگاہوکرسڑکوں پرنکلنے لگے توظاہرہے کہ انسانیت کے دروازے بندہوجائینگے۔کچھ ایسا ہی ماحول آج سارے ہندوستان میں ہے۔

مہودے،اسی لئے میں آپ سے کہناچاہتا ہوں کہ سوال معاوضہ کا نہیں ہے،بھکاری کوبھیک دینے کا نہیں ہے، اقلیتوں کورحم وکرم پرزندہ رکھنے کا سوال نہیں ہے بلکہ سوال اس سنودھان کا ہے جس کوکچھ لوگ بدلنے کی بات کرتے ہیں۔اس سنودھان کی رکھوالی کی ذمہ داری ان لوگوں پربھی ہے جوآج بہت دکھی ہے،جن کے ساتھ بہت انیائے ہوا ہے۔

مہودیہ،میں ایک مثال اوردیتا ہوں آپ کوگجرات کی۔میں اس مانسکتاکی طرف انگلی اٹھانا چاہتا ہوں جومانسکتا آج اقتدار میں ہے،ستا میں ہے،جوآج کمزورکوجینے دینا نہیں چاہتی،جواقلیتوں کاخاص طور سے اپنے ظلم کا نشانہ بنائے ہوئے ہے۔مہودیہ،گجرات کے قبرستان میں ایک لاش دفن ہوئی اوراس لاش کوآر۔ایس۔ایس اورشیوسینا کے کاررئیہ کرتاؤں نے نکال کرباہر پھینک دیا باوجوداسکے کہ یہ مقدمہ جیتا جاچکاتھا زمین کا۔آخری عدالت سے یہ مقدمہ جیتا جاچکاتھا لیکن مائٹ ازرائٹ کواپنااختیارات اوراپنا حق سمجھتے ہوئے جوزندوں کومارنے کاکام کرتے ہیں انھوں نے مردوں کوبھی قبرستان میں رہنے دینے کا حق نہیں دیا ہے۔اس لئے میں آپکے ذریعہ سرکارتک یہ بات پہنچانا چاہتا ہوں کہ معاملہ صرف معاوضہ کا نہیں ہے بلکہ معاملہ انتہائی سنجیدہ ہے۔میں مقابلہ کرنا چاہتا ہوں اس سرکار کا اورگئی ہوئی سرکارکا۔میں اس کی اچھائیوں اوربرائیوں کی طرف انگلی نہیں اٹھانا چاہتا ہوں۔یہ بالکل صحیح با ت ہے کہ آپکوکم وقت ملا ہے۔اتنے کم وقت میں آپنے توبہت کچھ کردکھایا ہے۔لمبے وقت میں آپ کتناکام کرینگے یہ تواتیہاس ہی بتائےگا۔تاریخ بتائے گی،لیکن ہمیں معلوم ہے کہ دہلی شہر کے کناٹ پلیس کے علاقے میں

جب کچھ رئیسوں کوپولیس نے مارا تھاتواسکے خلاف 302کامقدمہ قائم ہواتھا،لیکن اسی ایس۔ایس۔پی۔کے خلاف کوئی کارروائی نہیں کی گئی۔جبکہ وہ تسلیم کرچکا ہے کہ ہاں کرمنلس کے دھوکے میں بے گناہوں کومارا گیا ہے۔دہلی کی سڑک پرمارے جانے والے کے لئے تو302کا مقدمہ لکھاجاسکتا ہے۔لیکن غریب اقلیت کے لوگ پانچ پانچ لوگ اکٹھے ماردئے جاتے ہیں،لیکن اس داروغہ کے خلاف کسی قسم کی کارروائی نہیں ہوتی۔

اس لئے میں آپ کے ذریعہ سرکار سے درخواست کرنا چاہونگا کہ ان مظالم کوروکے۔ورنہ یہ مظالم ایک دن کسی بڑے نتیجہ کا پیش خیمہ بن سکتے ہیں۔میں آپکا شکرگزارہوں کہ آپ نے مجھے بولنے کا موقعہ دیا اورمیں حکومت سے امیدکرتا ہوں کہ اس معاملے کووہ اپنی مانسکتا اوراپنی ذہنیت کی بنیاد پرنہیں بلکہ انصاف اورناانصافی کی بنیاد پر طے کریں گے۔ بہت بہت شکریہ۔}

उपसभापति: सिकन्दर बख्त साहब यहां मौजूद हैं । आपने रेफर किया कि दिल्ली में ऐसा वाकया हुआ था,टैरस्ट्रिस समझकर मार दिया था लोगों को और उस पर काफी हंगामा हुआ और हाऊस में भी डिस्कशन हुआ था । सिकन्दर बख्त साहब,आप सरकार को यहां रिप्रेजेट कर रहे हैं । मैं चाहूंगी कि आप इसको नोट कर लें और जो बात इन्होंने कहीं है उसकी पुष्टि करके जो कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए,वह जरूर की जाए क्योंकि इस तरह से किसी को भी मार दे और कहे कि हमने तो टैररिस्ट समझा था,यह गलत है ।

श्री सिकन्दर बख्त: जी,बेहतर हैं ।

श्री ख़ान गुफरान ज़ाहिदी: मैडम,मैं भी बोलना चाहता हूं ।

उपसभापति : आपका नाम तो नहीं है मेरी लिस्ट में फिर भी मैं आपको बुला लेती हूं । बोलिए ।

श्री ख़ान गुफरान ज़ाहिदी (उत्तर प्रदेश): मैडम,शुक्रगुज़ार हूं कि आपने मुझे इस दर्दनाक वाकये पर कुछ कहने का मौका दिया ।

" क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता ।
बिन कहे भी रहा नहीं जाता " ।

सच यह है कि 24-25 और 26 जुलाई की अजीब तारीखें हैं । मुल्क की सियासी जिंदगी में ज़हर घोलने की कोशिशों के तौर पर सामने आई है । 24 तारीख को जैसा कि हमारे एक साथी ने कहा कि एक रियासत में उसके सरकारी हॉल में एक मीटिंग में एक ख़ास नज़ीरियात के लिए एक पार्टी के संचालक मुल्क की सबसे ऊंची संर्विसेज के लोगों को बुलाकर आपस में गेट-टू-गैदर कर रहे थे या क्या कह रहे थे या क्या सुन रहे थे,मैं नहीं जानता पर मैं मान लेता हूं जैसे कि एक बात कहीं गई है वह साहब एक यूनिवर्सिटी और विश्व विद्यालय के पुराने साथी थे और उस्ताद-शार्गिद के बीच वार्ता थी । आपस मैं बैठकर कुछ उस्तादी और कुछ शागिर्दी की बातें कर रहे थे । मैं इसको नहीं मानूंगा इसलिए कि उसके अंदर सब सूबे के मुख्य मंत्री भी मौजूद थे । वह तो विश्व विद्यालय के साथी नहीं थे । उनकी मौजूदगी इस बात का इशारा करती है कि सरकारीकरण का एक नया सिलसिला शुरू किया गया है कमेटिड करने के लिए उन एडमिनिस्ट्रेटिव आफिसरों को एक नई राह तलाश की गई थी,इस मुल्क की खाकी वरदी पहने हुए पुलिस है,मैं सब पुलिस वालों को नहीं कहा रहा हूं लेकिन पर्टिकूलरली उस खास किस्म की पुलिस का ज़िक्र कर रहा हूं जो आज भी मौजूद हैं,आज़ादी से पहले इस बात की तरफ तवज्ज़ोह थी कि गुलामों पर हकुमत करने का एक अख्तियार सा मिला था पुलिस को,मार-मार कर सीधा रखों । किसी तरह से अपना बनाए रखो,इनको सरकार की तरफ करो,इनको

तवज्ज़ो दिलाओ,इनको सरकार का गुलाम बनाओ,यह जो प्रया और मानसिकता उस पुलिस की थी । चार-चार कमीशन बनने के बाद हैरत है कि जहां खाकी वरदी पहनी ऐसा हो जाते हैं जैसे कोई आर्गनाइज्ड डकैत बन जाता है । हमारे यहां एक जस्टिस मुल्ला हुआ करते थे । वह इस सदन के भी मैंबर रह चुके हैं । उन्होंने अपने एक जजमेंट में लिखा था कि टेरोरिस्ट से तो बच सकते हैं लेकिन आर्गनाइज्ड लाखों लोगों के टेरोरिज्म से कैसे बचें । अपने जजमेंट में लिखा है कि बाहर जगह की पुलिस वाकई आर्गनाइज्ड गुड़ों की तरह काम करती है । और नोंवरर्दी पहनने के बाद यह मदमस्त हाथी की तरह इंसानों को कुचल देती है । यह उनका स्टेटमेंट आफ फैक्ट था एक मुकदमें के सिलसिले में ।

मैडम,24-25 जुलाई की रात का यह वाकया बताया गया है और 26 तारीख की सुबह डोडा का मामला आया । डोडा में बेगुनाह हिन्दू भाईयों को सुबह के वक्त औरतों को,मर्दो को,बच्चों को टेरेरिस्ट जिन्हें अन-आर्गनाइज्ड कहते हैं नई-नई मशीनगनों से आए और उन्होंने उनको भूनकर मार डाला । वह एक दर्दनाक हत्या जिस पर इस एवाम ने आंसू बहाए,उससे ज्यादा दर्दनाक बात यह है कि कानून के मुहाफिज वहां नहीं पहुंचे और यहां मुजफ्फरनगर में कानून के मुहाफिजों ने 25 तारीख को 5 बेगुनाह मुसलमान नौजवान बच्चों को जो 18 से 30 वर्ष की उम्र के थे जिसमें से एक अपनी बीवी को लेने के लिए महसूदाबाद गांव के पास जा रहा था और अभी उस रोड़ पर गाड़ी चली नहीं थी कि पीछे से पुलिस की एक गाड़ी आ गई । ऐसा मालूम होता था कि वरदी पहने हुए मुहाफिजों ने,वहां तो यानी डोडा में अचानक टेरोरिस्ट आए थे और यहां वरर्दी पहनकर वही टेरोरिस्ट आया और उसकी मानसिकता भी जो थी कि उसने नहीं पूछा कि-तुम कौन हो,क्या हो(टाइम्स आफ इंडिया के मुताबिक) मेरा कथन नहीं है,वह क्या लिखता-

It is stated in the newspaper:

> "In a memorandum handed over to SSP S.N. Sawant, relations of the victims alleged that the police bad cut off both the hands of Nafeez and a leg of Saleem and of the other victims of that place."

यानि उनको गोली मारने से चैन नहीं पड़ा । कितना इंतकामी ज़ज्बा था ? क्या चीज़ थी जिस ज़ज्बे के तहत उन्होंने उनके हाथ –पैर भी काटे ? अगर वे डकैत थे,

अगर वह एनकांउटर था एनकांउटर के नाम पर गोलियां मार कर खत्क किया जाता है,दूर से तसवीरें ली जाती है,उनके हाथ-पैर काट कर खत्म नहीं किया जाता है । उसमें से फरमूद नाम का एक बच्चा आज तक गायब है । मैडम,मुझे इस सिलसिले मेंतीन-चार बातें कहनी है । मैडम,बहुत अफसोस का यह वाकया है,दर्दनाक वाकया है और खुशी भी इस बात की है कि पूरा मेरठ बंद हो गया,नेता सदन को मालूम है,पूरे मुजफ्फनगर में सभी लोग आपस में मिल कर बात कर रहे हैं । टीक वही हाल जो डोंडा का है । वाह रे हमारे मुल्क का सेक्युलरिज्म । वाह,वाह,खुशी की बात है,दिल,सीना ऊपर उठता है कि इस तरह का वाकया क्या बात पेश करता है मकसद क्या था पुलिस की इस छोटी सी टुकड़ी का ? कोई मकसद नहीं,सिवाय इस एक मकसद के जिस मकसद की तरफ हमारे साथियों ने इशारा किया कि जब पांच नौजवान मारे जाएंगे,एक उत्तेजना फैलेगी,इश्तियाल फैलेगा,लोग जमा होंगे,ज़ज्बा पैदा होगा इंतकाम का,थाना घेरा जाएगा,कुछ और लोग मारे जाएंगे,फिर गोलियां चलेंगी,फिर पी.ए.सी.आएगी,फिर हाशिमपुरा होगा,फिर मालियाना होगा,यही तो होगा । इसलिए मकदस क्या था ? कुछ क्यों नहीं ? इनोसेंट एस.एस.पी.कह रहा है कि डी.एम.मेजेस्ट्रियल इनक्वायरी करा रहा है । (**समय की घंटी**) मैडम,दो-तीन मिनट में अपनी बात खत्म करना चाहता हूं,मेरा सिलसिला टूट गया । इस वाक्ये को कहेंगे कि यह स्टेट सबजेक्ट है,सेंट्रल सबजैक्ट है,सी.बी.आई.के पास बड़े काम है,बड़ा विभाग है,वह क्राईम के मामलात को कहां तक देखेगी ? यह वक्त है हमारी सरकार को सोचने का । ये हमारी इख्तलाफी नज़रियात की सरकारें,मुख्तलिफ पार्टियों की मुख्तलिफ तरह आएंगी,हमारा फेडरेल कैरेक्टर हैं,स्टेट में कोई भी सरकार दूसरे नज़रियात की आ सकती हैं,सेंटर में कोई भी सरकार दूसरे नज़रियात की हो सकती है । अगर स्टेट में ऐसी कोई बात होगी तो डिस्टर्ब्ड एरिया करार दिया जाएगा । मैं समझता हूं कि उत्तर प्रदेश में यह जो सिलसिला है वाकयात का पिछले पंद्रह दिनों में,खास तौर पर चुन-चुन कर अकल्लियतों के साथ इस तरह का कार्य किया जा रहा है मैं समझता हूं कि सेंट्रल गवर्नमेंट को,हमारे कंस्टीट्यूशन मेर्स को,इस हाऊस को,उस हाऊस को मिलकर एक फैसला लेना होगा और एक ऐसी एजेंसी भी बनानी होगी और एक ऐसा कंस्टीट्यूशन संशोधन लाना होगा कि अगर कहीं नज़रियात के तहत पर,अगर साम्प्रदायिकता के आधार पर,अगर किसी नज़रियात के इख्तलाफ पर,अगर सियासी पार्टियों के

I खिलाफ एक मुहिम इस तरह की चलाई जाती है और लोगों को इन बुनियादी पर मारने के लिए पुलिस का हथियार इस्तेमाल किया जाता है...पुलिस क्या करती आई है ? आकाओं का,अपने सरकारी आकाओं की नज़र को अपनी तरफ बेहतर बनाने की गरज से जो भी चाहती हैं,करती है ताकि बेहतर पोस्टिंग पा सके,बेहतर अच्छे-अच्छे मंसब पा सके । जैसा कि मारे एक माननीय साथी ने कहा कि एक आई.जी.ने फांसी लगा ली उस पर असफर की खातिर जिसका नाम लिया ,मैं नाम नहीं लूंगा लेकिन उसने ऐसा किया । तो ऐसे आदमी को फिर पोस्टिंग दी जाए और फिर इस तरह का काम...हम और तो कुछ नहीं कर सकते । हमारी सरकारी नहीं है,सरकार हमारे साथियों की है,अब वे इस बात को खुद देखें । हमारा वक्त होगा तो...अभी तो हम कुछ नहीं कर सकते,हमारे और साथियों का वक्त आएगा तो कुछ कर सकते हैं लेकिन हम नज़र में बसा रहे हैं कि कौन-कौन से अफसर क्या-क्या कर रहे हैं और जिस वक्त कभी हमारा वक्त आएगा तो ऐसे अफसरों का जो इंसानियत के दुश्मन हैं,मैं किसी और की बात नहीं करता,जो इंसानों के दुश्मन है,जो खुलेआम कत्ल कर डालते हैं जो वरदी पहनकर,मुहाफिज़ हो कर राहज़नी का काम करते हैं,कत्ल करते हैं,किस तरह उनके साथ व्यवहार किया जाए,इस पर ज़रूर सोचना पड़ेगा । मैं तो यही चाहता हूं कि कोई एजेंसी बने । यह आतंकवाद फैला कैसे पंजाब में ? किसी और जगह नहीं,नेता सदन यहीं से बोल रहे थे-जब-जब जुल्म की आंधी आती है तो सिलसिला इसी तरह का शुरू होता है । क्या उस एक-एक घर में,चीफ व्हिप साहब भी बैठे हुए हैं,एक-एक घर में जिसमें मातिम हो रहा है और पुलिस का एस.एस.पी.कह रहा है कि मिस्टेक से हुआ है,यह हेडिंग कह रही हैं-

पुलिस की मिस्टेक से पांच जानें मासूमों की चली गई और कुद सियासी हुक्मरान ऐसे लोगों को जब सलाह दें,तो उससे ज्यादा दर्दनाक कोई बात नहीं हो सकती"

[3.00 P.M.]

हमको इससे शर्म आती है,मैं शार्मिदा हूं कि अपने मुल्क मेंऐसे लोग भी मौजूद हैं जो सियासी तख्तनशीनी के बाद कत्लेआम को बढ़ावा देने के लिए ऊपर से हिफाज़त उन अफसरान की करते है जो कत्लेआम में मलव्विस होते है,सम्मिलित होते हैं,क्या वक्त आ गया है हमारी बर्बादी का ? यह आतंकवाद कैसे फैलता हैं?

क्या उनमें उस पुलिस वाले के खिलाफ इंतकाम का जज्बा पैदा नहीं होगा और क्या यही जज्बा बढ़ते-बढ़ते इंतकाम का जज्बा नहीं होगा ? पंजाब में आतंकवाद कैसे पैदा हुआ हैं? खुदरौ चीज़ है यह जहरीले खतरनाक पेड़ है जो हमारी जमीन में कहीं-कहीं उग आता है और जब जुल्म की आंधी चलती है तो रद्दे-अमल में इस तरह का पेड़ जरूर खड़ा हो जाता है । हमें अफसोस है,खुदा न करे कि हमारे हालात ऐसे पैदा हों कि हम इंतकाम के इस जज्बे पर जाएं । अच्छा है,अभी वक्त है कि हम ऐसे कातिल/वर्दीपोश लोगों के खिलाफ जितनी भी संख्त कार्यवाही हो सकती है,करें । उनको मुअत्तल किया जाए,302 चलाई जाए । कोई ऐजेंसी यहां से जाए,चैक करे और वहां की हुकूमत को संख्ती से कहा जाए कि इंसान-इसांन में फर्क करने की उन पुलिस वालों की आदतों को रोकेने के लिए कोई कारगर कार्रवाई करें । धन्यवाद ।

श्री नीलोत्पल बसु: इसके ऊपर तो मेरे ख्याल में इन लोगों को कोई आपत्ति नहीं होगी,रेज़ोल्यूशन भी हो सकता है क्योंकि पुलिस ...(**व्यवधान**)....

श्री संघ प्रिय गौतम(उत्तर प्रदेश)**:** मैडम,हमें बोलने का मौका दीजिए । ...(**व्यवधान**)....

उपसभापति: मैंने आपका नाम पहले ही लिखा हुआ है । आपने मुझे बोला था ।

श्री संघ प्रिय गौतम: महोदया,आज़म खान साहब ने अभी बड़ी अच्छी बात कहीं थी कि हमारे हिन्दुस्तान का माहौल इसी तरह का बना हुआ है । अपराध और अपराधी सारे देश में,हर प्रदेश में बराबर बढ़ते चले जा रहे हैं । पिछली बार वोहरा कमेटी की रिपोर्ट परजब चर्चा हुई थी,यह कहा कि इनमें राजनीतिज्ञ भी मिले हुए हैं,ब्यूरोक्रेट्स भी मिले हुए है,ज्यूडीशरी के लोग भी इन्हें जमानत दे देते हैं,इंडस्ट्रीयलिस्ट भी मिले हुए हैं,अखबार वाले भी बहुत सहायता करते हैं-सारा आवा-का –आवा खराब हैं । हम जब यहां चर्चा करते हैं कि महिलाओं पर अत्याचार होते हैं तो फिर ऐसा मालूम पड़ता है कि सारे देश में महिलाओं पर ही अत्याचार हो रहा है । जब हम अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की बात करते हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि सारे जुल्म और अत्याचार इन्हीं पर हो रहे हैं । जब हम बच्चों की बात करते हैं ....(**व्यवधान**)...

श्री खान गुफ़रान ज़ाहिदी: नहीं हो रहे क्या ? ....(**व्यवधान**)...

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Let me say what I want to say. I didn't interrupt you.

उपसभापति: उन्हें बोलने दीजिए।

श्री संघ प्रिय गौतम: जब माइनॉरिटीज का नाम लिया गया तो ऐसा मालूम होता है कि सारे जुल्म और अत्याचार माइनारिटीज पर ही होते हैं । ...(**व्यवधान**)....

श्री खान गुफ़रान ज़ाहिदी: महोदया,मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर हैं । मैंने यह बात नहीं कहीं । ....(**व्यवधान**)....मैं बिल्कुल सुनना नहीं चाहता । मैंने यह बात कहीं है,हमारे नेता सदन मौजूद है और चीफ व्हिप भी मौजूद हैं,मैंने डोडा पर जो कुछ कहा है,एक लफ़्ज भी कहा होगा,लेकिन डोडा में मरने वाले हिन्दू भाई-बहनों के बारे में जब कहा तब भाई गौतम जी नहीं बोले हैं मुझे माज़रत के साथ कहना पड़ता है कि मैंने इस तरह की कोई बात नहीं कहीं है ...(**व्यवधान**)....

श्री संघ प्रिय गौतम: मैंने आपको तो कोट ही नहीं किया । मैं कहना क्या चाहता हूं कि इस देश में अपराधी-चाहे वह किसी जाति धर्म के हों,वह आगे बढ़ रहे हैं । कल गुरूदास दासगुप्त साहब ने कहा कि इंटायर कंट्रीज पुलिस-तमाम खराब है । यह सारा रिकार्ड पर हैं । तो पुलिस भी खराब हैं,अपराधी भी आगे बढ़ रहे हैं । सब राज्यों में यह हो रहा है लेकिन यह भी मत भूलिए कि अपराधी अपराधी को भी मार रहे हैं और पुलिस वाले भी अपनी जान बचाने के लिए,या हम लोग जो यहां पर चिल्लाते हैं,उसकी वजह से इनकाउंटर भी करते हैं । कभी फेक इनकांउटर भी हो जाता है । आपको मालूम हैं ...(**व्यवधान**)...मैं सच बोलने की कोशिश करता हूं इसलिए कहना क्या चाहिए कि अगर आपकी निगाह में यह फेक इनकांउटर है तो उसकी जांच कराई जाए और जांच के बाद सही बात निकलती है तो फिर उनको सजा दी जाए । इसे कम्यूनल न बनाया जाए । मुझे सिर्फ इतना कहना है । मै बड़ी अदब के साथ-क्योंकि मैं यू.पी.का रहने वाला हूं और एक पार्टी का पदाधिकारी हूं जिसकी सरकार हैं ।

I am daily in touch with what is happening in Uttar Pradesh. I try to ascertain all these facts. और यह हमारा पड़ौसी जिला है । मैं केवल अखबारी रिपोर्ट पर विश्वास नहीं करता । I ascertain the facts as a citizen of the country.

कम से कम मेरे जैसा व्यक्ति,हालांकि मैं लॉयर भी रहा हूं...अब पोजीशन बदल गई है और बदलीन भी चाहिए । पहले तो यह था कि सैंकड़ों अपराधी मारे जाएं लेकिन एक बेगुनाह नहीं मारा जाना चाहिए । लेकिन जिस तरह से हम इस बात को कह रहे हैं उससे तो शायद कोई गुनाहगार आसानी से न तो मारा जाएगा,न कानून की गिरफ्त में आएगा,न अदालत से सजा पाएगा । इसलिए बेलेन्शूड व्यू लीजिए,मैं यही कहना चाहूंगा । मैं सरकार से कहूंगा कि इसकी जांच कराई जाए और अगर वास्तव में ये झूठे और बेकसूर मारे गए हैं तो निश्चित रूप से पुलिस के खिलाफ कत्ल का मुकदमा दर्ज होना चाहिए।

उपसभापति: गौतम जी हमेशा अच्छा बोलते हैं । कभी-कभी बीच में ज्यादा बोलते हैं।

श्री रमा शंकर कौशिक: मैडम,आप नेता सदन को कुछ कहें...

उपसभापति: गौतम जी और जाहिदी जी के बोलने से पहले ही मैंने नेता सदन का ध्यान इस तरफ खींचा और कहा कि चेयर का डायरेक्शन इस तरह से होता है क्योंकि यह स्टेट गवर्नमेंट का मामला है वह इमीडिएटली कुछ जबाव नहीं दे सकते हैं । जो बात सदन ने उठाई है,एक मत से उठाई है कि अगर इनोसेंअ लोग मारे गए हैं जैसा कि हाउस में कहा गया है उसको पुलिस ने कबूल किया है। वहां की सरकार ने कबूल किया है कि यह गलत आईडेंटिटी थी,वे अपराधी नहीं थे वे मारे गए उनके साथ जुल्म और ज्यादती हुई है तो सरकार उस पर जरूर एक्शन लेगी ।

सदन के नेता (श्री सिकन्दर बख्त): आपके अल्फाज कम थे लेकिन आपने जो तवज्जों पहले दिलाई है मैं उसको कह चुका हूं रिएक्ट कर चुका हूं,बता चुका हूं।

}**نیتا سدن شری سکندربخت**:آپ کے الفاظ کم تھے لیکن آپ نے جوتوجہ پہلے دلائی ہے میں اسکوکہہ چکا ہوں-ری ایکٹ کرچکا ہوں-بنا چکاہوں-{

†[ ]Transilleratioa in Arabic Script

श्री बालकवि बैरागी (मध्य प्रदेश): मैडम,मुझे नेता सदन के बारे में एक प्रार्थन करनी है । मुझे प्रार्थना सिर्फ यह करनी है कि आप सिकन्दर बख्त साहब के ऊपर एक प्रतिबन्ध लगा दीजिए कि वे जब भी इस हाउस में आएं तो उसके पहले लोक सभा से होकर नहीं आंए । ये जब-जब वहां से आते हैं बहुत गुस्से में आते हैं और बड़ी मुश्किल से नार्मल होते हैं ।

श्री ओंकार सिंह लखावत: गुस्सा न करें यह बात आप अपनी पार्टी वालों से भी कह दें ।....(**व्यवधान**)...

श्री संघ प्रिय गौतम: आप कविता सुनाकर गुस्सा कम कर दीजिए । ....(**व्यवधान**)...

श्री बालकवि बैरागी: ये वहां से जब भी यहां आए हैं,यहां पर बरसे हैं और बहुत गुस्सा करते हुए आए हैं । अब नार्मल हुए हैं ।

उपसभापति: जो लोग इस हाऊस के मेम्बर रहते हैं वह बहुत समझदारी से अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं । कभी-कभी उधर चले जाते हैं तो दूसरी बात है । श्री अहमद पटेल ।

Perpetuating Atrocities on Minorities and Weaker Sections in Gi^arat and other parts of the Country.

श्री अहमद पटेल(गुजरात): महोदया,मै आपका आभारी हूं कि एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर,गंभीर विषय पर आपने मुझे सदन का ध्यान आकर्षित करने का मौका दिया । बहुत ही भरे मन और व्यथित हृदय के साथ में आज सदन के सामने खड़ा हुआ हूं । इसलिए नहीं कि सिर्फ अक्लियत या वीकर सैक्सन का सवाल है । सवाल इन्सान का हैं,सवाल इंसानियत का है ।

अंधेरों में जो रोशनी दिखाई देती हैं ,
बस्ती अमन की जलती हुई दिखाई देती हैं,
और सियासत,सियासत इन्सान को ऐसे गन्दे मोड़ पर ले आई
कि इंसानियत आज दम तोड़ती दिखाई देती हैं ।

मैडम,अफसोस की बात तो यह है कि गुजरात,राजस्थान,उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में ये हो रहा हैं जम्मू एंड काश्मीर में कुछ दिन पहले हमने डोडा के वाकये पर यहां चर्चा की और सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पाकिस्तान में भी जो हमसे अलग हुआ था मानवाधिकार का वहां पर भी उल्लंघन हुआ है । अक्लियतों के साथ वहां पर जो हो रहा हैं,उसको हम अच्छी तरह से जानते हैं । ऐट्रोसिटीज किसी पर भी हो-चाहे वह अक्लियत पर हो,चाहे वीकर सैक्शन पर हो,चाहे मेजोरिटी क्मयुनिटी पर हो,उसकी भर्त्सना होनी चाहिए,उसकी निन्दा होनी चाहिए । लेकिन अफसोस की बात तो यह है कि कभी-कभी हम भी सब्जेक्टिव हो जाते हैं,सलेक्टिव हो जाते हैं । ऐसे जो भी हादसे होते हैं,जिस तरह से उनकी निन्दा होनी चाहिए उस तरह की नहीं होती है । प्राइवेटली बहुत सारे हमारे जो सत्ता में लोग हैं गुजरात में । वे इसबात को स्वीकार कर लें कि जो कुछ हो रहा है वह गलत हो रहा है । लेकिन प्राइवेटली क्यों कह रहे हैं,पब्लिकली इसका खंडन क्यों नहीं करते ? जहां भी ऐसे मसले आते हैं,मैं समझता हूं कि अगर किसी पर एट्रोसिटी हो,किसी पर अन्याय हो,इसके खिलाफ सब को आवाज उठानी चाहिए,इसको सब को कंडेम करना चाहिए,उसकी निन्दा होनी चाहिए । अफसोस तो यह है कि राष्ट्रपति महात्मा गांधी जी की आजादी के बाद हत्या हुई ,देश का बंटवारा हुआ है । लेकिन आज कुछ ताकतें ऐसी है जो लोगों के दिलों का बंटवारा कर रही है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जो विचारधारा है,आज उसकी हत्या हो रही है । गुजरात में पिछले दिनों से जो कुछ हो रहा है,मैं समझता हूं कि यह सीमा से बाहर है । इसका बयान इसको बंद करना भी मुश्किल है । पिछले चार महीनों में बीस से भी ज्यादा वाकियात वहां पर हुए हैं,घटनायें घटित हुई है । वहां पर जो माहोल हैं,सत्ता में आने से पहले तो यह कहा गया कि हम भय-मुक्त शासन,भय-मुक्त वातावरण,भय-मुक्त वायुमंडल तैयार करेंगे । लेकिन वहां आज लोग भयभीत हैं । लोगों को आतंकित किया जा रहा है । वहां का जो सामाजिक ढांचा है,जो सोशल फैब्रिक हैं उसको कमजोर करने की कोशिश की जा रही है,सामाजिक स्परूप को तहस-नहस करने की कोशिश की जा रही है । जो वाकयात वहां पर हुए हैं मैं सब का यहां ज़िक्र नहीं कर सकता हूं क्योंकि इतना वक्त नहीं है । लेकिन चार-पांच जो वाकयात वहां पर हुए हैं,उन्हें मैं सदन के सामने रखना चाहूंगा ।

महोदया,कुछ देर पहले हमारे साथी ने बताया,उन्होंने जो ज़िक्र किया वह कपड़वन का वाकया है । बाकायदा क्रिश्यिन कम्युनिटी को वहां पर सिमेट्री के लिए जगह दी गई । गवर्नमेंट ने इसको नोटिफाई कर दिया,सर्वे नं. 643 को जब एक क्रिश्यिन भाई का देहान्त हुआ तो उनको वहां दफनाया गया । उसके बाद क्या हुआ ? काफीन को ऊपर लाकर सड़क पर रख दिया गया । शर्मनाक बात हैं । उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि इसका क्या किया जाए सिमेट्री में उसको दफनाने नहीं दिया गया । नदी किनारे कहीं जाकर उसको दफनाया